खरगोश और मुर्गा

The Rabbit and the Cock

किसी समय एक खेत में एक खरगोश रहता था।
एक दिन खरगोश ने रास्ते से जाते हुए एक मुर्गे को रोका और पूछा, ''कहो मुर्गे भाई, कहां जा रहे हो?''
मुर्गे ने उत्तर दिया, ''कहीं नहीं! मैं यहीं रहता हूँ।''
''तुमने यहां कब से रहना शुरू किया है?''
''अभी कुछ ही दिनों से। पर जब फसल कट जाएगी तब मुझे कहीं और जाकर भोजन और रहने की जगह खोजनी होगी।''
खरगोश और मुर्गा मित्र बन गए और सुख से रहने लगे।
एक दिन किसान अपनी फसल का निरीक्षण करने खेत पर आया। किसान ने अपने पुत्रों से कहा, ''फसल पक गई है और हमें इसे एक या दो दिन में काट लेना चाहिए।''
''हाँ पिताजी, आप ठीक कह रहे हैं।'' बड़े पुत्र ने कहा और

Once there was a rabbit who lived on a farm.
One day the rabbit spotted a cock and asked him, "Hello Cock, where are you going?"
"Nowhere. I live right here." replied the cock.
"When did you shift here?"
"Only recently, but once the farmer reaps the crop I will have to find a new place."
The rabbit and the cock became friends.
One day, the farmer came to the farm along with his sons. He told his eldest son, "At last, the crop is ripe and we must reap it in a day or two."
"Yes father, you are right," replied the sons.

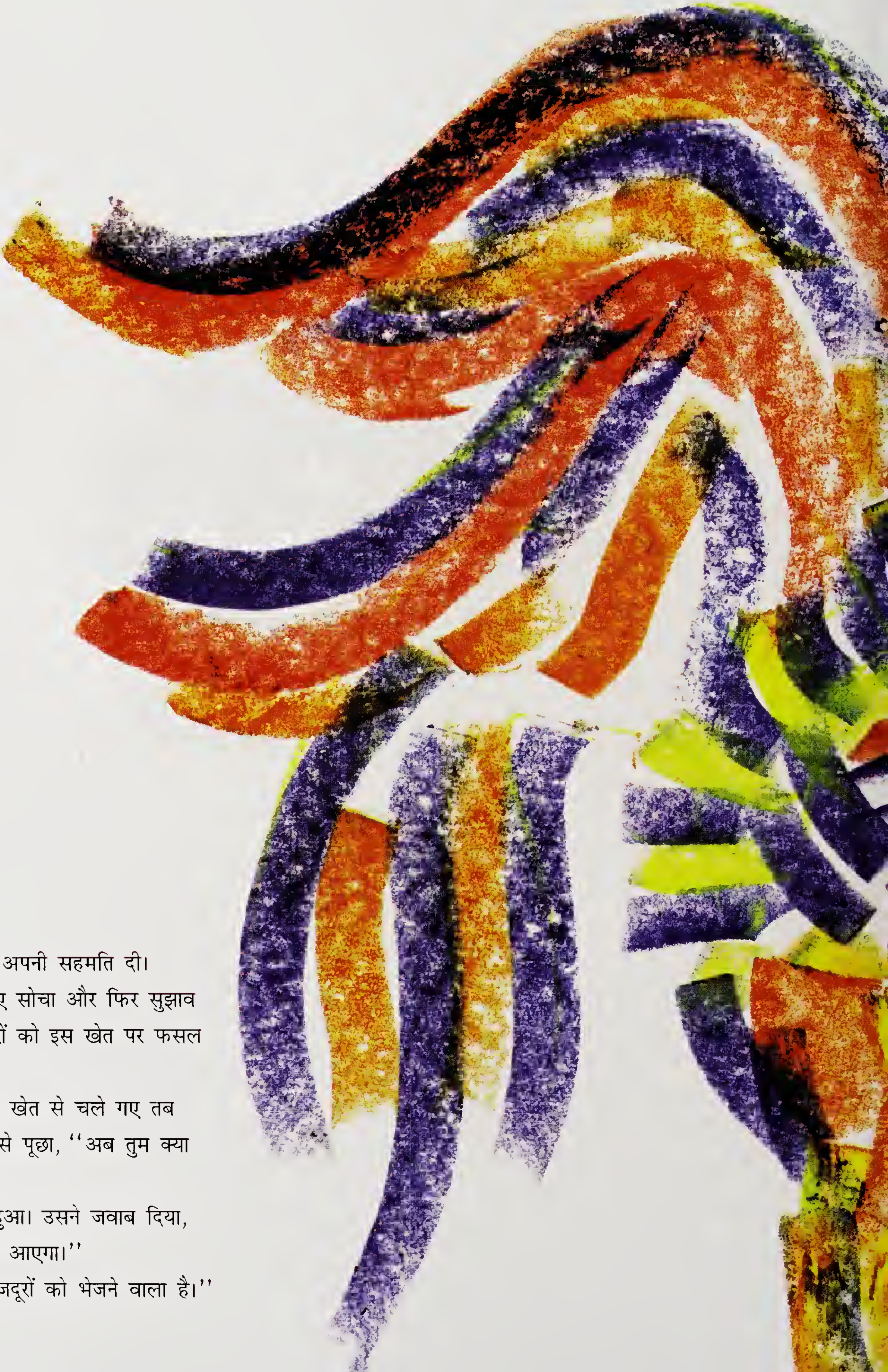

किसान के दूसरे पुत्र ने भी अपनी सहमति दी।
किसान ने एक क्षण के लिए सोचा और फिर सुझाव दिया, ''मैं कल कुछ मजदूरों को इस खेत पर फसल काटने के लिए भेजूंगा।''
जब किसान और उसके बेटे खेत से चले गए तब खरगोश ने अपने मित्र मुर्गे से पूछा, ''अब तुम क्या करोगे?''
मुर्गा ज़रा भी परेशान नहीं हुआ। उसने जवाब दिया, ''कुछ नहीं। कल कोई नहीं आएगा।''
''पर किसान कल अपने मजदूरों को भेजने वाला है।''

The farmer thought for a while and said, "I will send some workers to this field tomorrow to do the job."

After the farmer and his sons left the field, the rabbit worriedly asked the cock, "What will you do now?"

"Nothing, no one will come tomorrow," replied the cock.

"But the farmer is going to send his workers tomorrow," the rabbit persisted.

"I said there is nothing to worry about,

I am hungry," saying this the cock went away in search of food.

The next day, the farmer came again to

खरगोश ने ज़ोर देकर कहा।

''मैं कह रहा हूं न! कि चिंता की कोई बात नहीं है। मुझे भूख लगी है, क्या तुम मेरे साथ खाना खाओगे?'' यह कह कर मुर्गा भोजन की तलाश में चला गया।

अगले दिन किसान फिर से देखने के लिए आया कि फसल कट गई या नहीं। जब उसने देखा कि कुछ काम नहीं हुआ है तब उसे गुस्सा आया और उसने कोरे बहाने लगाने वाले मजदूरों को डांटा। किसान ने अपने बेटों को कहा, ''कल तुम दोनों फसल काटोगे।'' मुर्गा अब भी चिंतित नहीं हुआ, वह बोला, ''चिंता की कोई बात नहीं है। कल कोई नहीं आएगा।

अगले दिन उन्होंने किसान को अपने बेटो को डांटते हुए सुना। किसान अपने बेटों से कह रहा था, ''तुम लोग पूरा दिन क्या कर रहे थे? अब तक फसल काटी नहीं गई है।''

''पिताजी, हम माफी चाहते हैं। हम सो गए थे। हम कल फसल काटेंगे।'' बेटों ने कहा।

तब किसान बोला, ''मैं तुम्हारे भरोसे नहीं रह सकता, कल मैं खुद फसल काटने आऊंगा।''

इस बार मुर्गा सतर्क हो गया और बोला, ''मुझे तुरंत यह जगह छोड़ देनी चाहिए।''

''क्यों? जब वे पहले नहीं आए तो अब क्यों आएंगे?'' खरगोश ने पूछा।

मुर्गे ने समझाया, ''अब तक किसान दूसरे लोगों पर अपने काम के लिए निर्भर था। पर अब वह कहता है कि वह फसल खुद काटेगा। इसलिए मैं चिंतित हूँ क्योंकि अब काम हो कर ही रहेगा। अच्छा, खरगोश। मैं भोजन और रहने की किसी अन्य जगह की खोज में जाता हूँ।''

किसान ने निश्चित दिन पर फसल काटी।

see if the crops were reaped. He was annoyed when he saw that the job had not been done. He scolded his workers who gave him some lame excuses. The farmer then turned to his sons and said, "The two of you will reap the crop tomorrow."

The cock was still unperturbed. He said, "Nothing to worry. No one will come tomorrow.

The following day they heard the farmer scolding his sons, "What were you doing the whole day? The crop is not yet reaped."

"Father, we are sorry, we fell asleep. We'll do it tomorrow," pleaded the sons.

Then, the farmer said, "Well, I can't depend on you. Tomorrow I will come myself."

This time the cock was alarmed and said, "I must leave this place immediately."

"Why should you? They didn't come earlier why will they come now," asked the rabbit.

The cock explained, "Till now the farmer was depending on other people. Now he says that he will reap the crop himself. That's why I am worried because now the job is sure to be done. Good bye! Rabbit. I am off, to find another place for food and shelter."

Sure enough, the crop was reaped by the farmer on the appointed day.

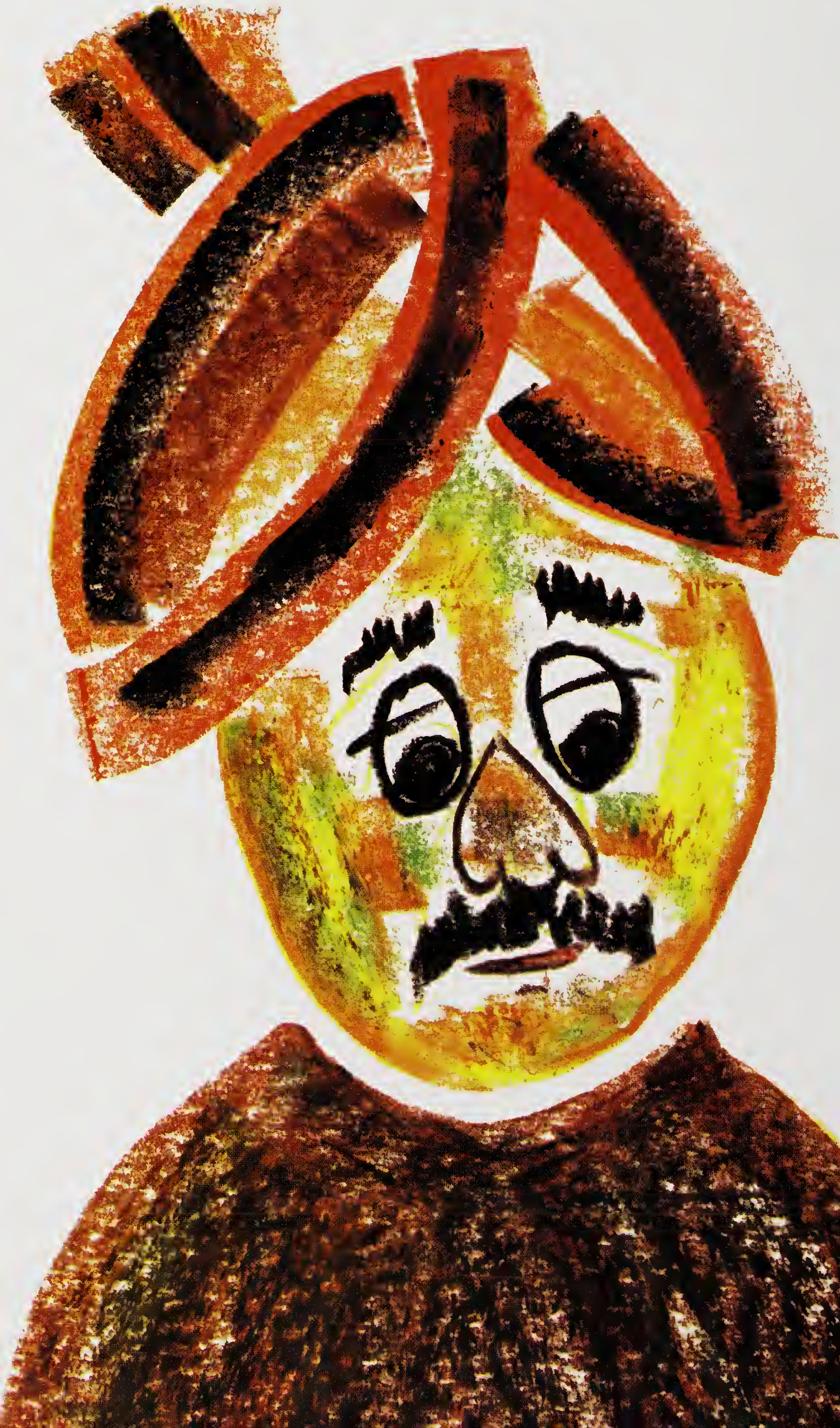

महानिदेशक, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15-ए, सेक्टर 7, द्वारका,
नई दिल्ली - 110075 द्वारा प्रकाशित

अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,
डब्लू - 30, ओखला इन्डिस्ट्रयल एरिया, फेस 2,
नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित

Published by Director General
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector 7, Dwarka,
New Delhi - 110075

Printed at
Aravali Printers & Publishers (P.) Ltd.
W-30, Okhla Industrial Area, Phase - 2
New Delhi - 110020

चित्र व आलेख : विजय परमार
Illustrations and text : Vijay Parmar